Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

बुद्ध की शिक्षाएं एवं व्यक्तित्व निर्माण

डॉ. कपिला बाला पांचाल*

* सहायक प्राध्यापक (मनोविज्ञान) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी शा. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – व्यक्तित्व व्यवहारिक, संज्ञानात्मक और भावनात्मक प्रतिमानों का वर्णन करता है जो किसी व्यक्ति के जीवन के प्रति अद्वितीय समायोजन का निर्माण करते है। व्यक्तित्व अपेक्षाकृत स्थिर होता है लेकिन अनुभवों और विकासात्मक प्रक्रियाओं के कारण समय के साथ बदल सकता है। व्यक्तित्व के अधिकांश सिद्धांत लक्षणों प्रेरणा, कौशल और पहचान पर ध्यान केन्द्रित करते है। व्यक्तित्व विशेषताएं कई जीवन परिणामों से संबंधित है, जैसे काम और रिश्ते की सफलता, मानसिक स्वास्थ्य, कल्याण और दीर्घायु व्यक्तित्व की आधुनिक अवधारणों जैसे स्वभाव का सुझाव दिया है जो खतरे और पुरस्कार के प्रति बुनियादी और स्वचलित प्रतिक्रियाओं को दर्शाते हैं जो सहचर्य अधिगम पर निर्भर करते हैं। ये चार स्वभाव हानि से बचाव, पुरस्कार पर निर्भरता, नवीनता की चाह और दृढता कुछ हद तक उदासीन, आशावादी, क्रोधी आदि व्यक्तित्व प्रकारों की प्राचीन अवधारणाओं के अनुरूप है । हालांकि ये स्वभाव दूसरी श्रेणियों के बजाय व्यक्तित्व के विभिन्नो आयामों को दर्शाते है।

व्यक्तित्व को अधिक स्वभावगत विशेषताओं से इस आधार पर अलग किया जा सकता है कि यह उस संस्कृति के साथ समायोजन को दर्शाता है जिसमें व्यक्ति रहता और बढता है जैसे कि किस बात पर शर्मिंदा या गर्व होना चाहिए और सांस्कृतिक मूल्य कई व्यक्तित्व विशेषताएं मानव में सार्वभौमिक हैं और कई उसके द्वारा मानी जाने वाली संस्कृति और धर्म पर निर्भर करता है।

बुद्ध का दृष्टिकोण – बुद्ध भले ही प्राचीन काल में हुए हो तथापि उनके बारे में यह एक निर्विवाद सत्य है कि जीवन की समस्याओं की ओर देखने का बुद्ध का दृष्टिकोण बुद्धिवादी था। गौतम बुद्ध असाधारण कोटि के बुद्धिवादी तथा मानवतावादी व्यक्ति थे। कुप्रथाओं अंधविश्वासों का वे खंडन करते थे। उस विज्ञानपूर्व काल में बुद्ध की दृष्टि वैज्ञानिक थी। संत होते हुए भी वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सोचते थे। हालांकि उनकी विचारधारा प्रमाणिक रूप से सिद्ध नही थी परंतु फिर भी अब उनकी कही गई कई बातें सही साबित होती दृष्टिगोचर होती हैं। बुद्ध शब्द का अर्थ है– वह व्यक्ति जो ज्ञानी है, प्रबुद्ध है तथा सुसंस्कृत है। बुद्ध का नाम पहले सिद्धार्थ था पर बाद में जब उन्हेंक मनुष्यों के दु:खों का स्वरूप कारण और उन्हें दूर करने के उपाय आदि का ज्ञान हुआ तब वे 55 वर्ष की आयु में हुए। अपना विवाहित जीवन एवं पत्नीऔ व पुत्र का त्याग करके लगातार छह वर्ष के प्रयास के बाद उन्हें दु:ख का स्वारूप, उसका कारण तथा उसे दूर करने के उपाय आदि के बारे में सारी बातें एकदम स्पष्ट हो गई। सभी समस्याएं सुलझ गई। उसके बाद उन्होने लगातर 45 वर्ष घूमकर सन्यासी रहकर ज्ञान प्राप्त किया और लोगों को दिया। सिद्धार्थ (गौतमबुद्ध) राजपुत्र थे उनकी माता का देहांत उनकी शैशावस्था में ही हो गया था उनका स्वभाव दयालुता और करूणा से भरा हुआ था, उनका आचरण हमेशा उच्च नैतिक तथा सांस्कृतिक स्तर का था शिकार करना उन्हें उचित नही लगता था उनका मत था कि सभी विवाद आपसी चर्चा से सुलझाने चाहिए।

बुद्ध उस समय हुए जब अन्य भारतीय दर्शन ज्यादातर पारलौकिक बातों का सहरा लेते थे और आप्तवाक्यों पर श्रृद्धा रखने की बात करते थे। उस सब आस्तिक परम्पराओं के विरूद्ध जाने के कारण बुद्ध को परम्परावादियों का बहुत विरोध भी सहना पड़ा । पर उन्होने अपनी लौकिक भूमिका नहीं छोडी। इस तरह वे प्रथम मानववादी हो गए।

बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया था। त्रिपिटक पालि भाषा में है जिनमें समस्त संग्रह है। गौतम बुद्ध द्वारा दिए गए चार आर्य सत्य बौद्ध धर्म के मूल आधार हैं जो जीवन की वास्तविकता दु:खों के कारण और उससे मुक्ति का मार्ग बताते हैं –

चार आर्य सत्यध इस प्रकार है –

दु:ख –जीवन में पीड़ा, असंतोष, बुढापा, बीमारी मृत्यु आदि सब दु:ख का कारण है।

दु:ख समुदय – हर दु:ख का कुछ न कुछ कारण है।

दु:ख निरोध – दु:ख का अंत संभव है।

दु:ख निरोध का मार्ग – दु:ख से मुक्ति पाने का एक निश्चित मार्ग है।

बौद्ध धर्म की मूल अभिधारणाएं एवं विशेषांक

बौद्ध धर्म का सार – बौद्ध धर्म को अवैदिक कहा जाएगा क्योंकि इसमें स्वर्ग प्राप्ति को धर्म का अंतिम लक्ष्य नहीं माना गया है। उपासना के स्थान पर समाधि को प्रधानता दी गई अपितु यज्ञ आदि कर्मो को भी मान्यता नहीं दी गई । बौद्धधर्म में जातिवाद को कोई प्रश्र नहीं दिया गया है।

बौद्ध धर्म लगभग 12 वीं शताब्दी तक भारत में बना रहा और अब अधिकतर बौद्ध तिब्बत, चीन, जापान, बर्मा, थाईलैण्ड, सिलोन इत्यादि देशों में सुदृढ़ रीति से पाए जाते हैं। बौद्धों ने भारत में नालंदा विक्रमशीला, तक्षशिला इत्यादि बडे–बडे विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। इन विद्यालयों की कृतियों से पता चलता है कि बौद्धों का धर्म साहित्य का भण्डार बहुत विशाल था । बुद्ध भगवान के जीवनकाल में कोई भी बुद्धवचन संभवत: नही लिखा गया। पर उनकी मृत्यु के बाद राजगृह में 477 ई.पू. एक सभा की गई जिसमें बुद्ध वचनों को लिपिबद्ध किया गया।

तीन मुख्य पुस्तके है जिन्हे त्रिपिटक कहा जाता है –

1. विनयपिटक – इसमें बुद्ध द्वारा भिक्षुओं के आचार से नियम बनाए
2. सुत्तपिटक – इसमें बौद्ध धर्म के सिद्धांत व संगोष्ठियां है।
3. अभिधम्मपिटक – इसमें दार्शनिक चर्चाएं और बौद्ध धर्म विश्व वचन पाए जाते हैं।

बौद्ध धर्म की विशेषताएँ :

1. बौद्ध धर्म में कर्म–संसार–ज्ञान–मुक्ति का चतुष्पदी स्तम्भ पाया जाता है।
2. बौद्ध धर्म निरीश्वरवादी है।
3. सभी वस्तुएं बौद्ध धर्म में दु:खपूर्ण बनाई गई है।
4. बौद्ध धर्म के तीन व्रत बहुत ही महत्वपूर्ण है।
   बुद्धं शरणं गच्छामि
   धम्म शरणं गच्छामि
   संघं शरणं गच्छामि
5. बौद्ध धर्म पूर्णतया बुद्धिवादी है।
6. बौद्ध धर्म जातिभेद विरोधी है।
7. इसमें अष्टांगिक मार्ग का विधान है।
8. मानव का चरम लक्ष्य है निर्वाण प्राप्ति यह नकारात्मक गति है जो बौद्ध धर्म को समस्त मानव धर्मो से अलग करती है।
9. बौद्ध धर्म को मध्यममार्गी कहा गया है इसमें योग और तपस के बीच का मार्ग पालन किया जाता है।
10. भिक्षु दीक्षा और मठवास पर बल दिया गया है। गृहस्थ जीवन की अवहेलना की गई है।
11. शील, समाधि (ध्यान) और प्रज्ञा ये तीन मुक्तिमार्ग अर्थात् दु:ख निरोध मार्ग है। शील प्रारंभिक कड़ी, समाधि बीच की और प्रज्ञा वह अंतिम दृष्टि है जिसमें निर्वाण गति का आभास मिल जाता है।

निष्कर्ष – इस प्रकार बौद्ध धर्म युवाओं को मानसिक शांति विस्तृत दृष्टिकोण व्यावहारिक और उद्देश्य पूर्ण जीवन जीने की राह दिखाता है। संकीर्ण मानसिकता को परिवर्तित करके अहिंसा एवं वर्तमान में जीने के प्रेरणा देता है। उनके अनुसार अति हर चीज की बुरी है संतुलित जीवन जीने के लिए मध्यम मार्ग को अपनाना चाहिए। अपना दीपक स्वयं बनना चाहिए ताकि स्वयं अपने मार्ग को खोजकर उसपर चल सकें। जागरूक बनें निर्णय लेने की क्षमता विकसित करें एवं अष्टांवगिक मार्ग का पालन करके नैतिकता से परिपूर्ण सुखद जीवन जीएं, किसी को कष्ट न पहुंचाएँ, स्वयं व दूसरों से प्रेम करना,जीव जन्तु एवं पर्यावरण के प्रति करूणा का भाव रखना ही बौद्ध धर्म का मूलमंत्र है जिसमें आज के युवा का सम्पूर्ण व्यक्तित्व निर्माण संभव है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. बंदिष्टे डी.डी. 'धम्मण हमारा एकमेव तारक' प. 3–6 Buddhist world press Delhi
2. मसीहया 'तुलनात्मडक धर्म दर्शन' पे. 88 मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली
3. Gomagekasunchamra (M.Phil.ready) University of Peradeniya "better life development from Buddhism"
4. धम्मपद श्लोक 21 मंगला सत्ता खण्ड 5 https//tipitika.org धम्म पद अप्पमदा बग्गा श्लोक–29
5. कुमारी नीमा : बौद्ध दर्शन के चार आर्यसत्य एक समीक्षात्मक अध्ययन Juni khyat UGC care Group listed Journal ISSN : 2278 4632 Vol 10 Issue -7 No-3 July 2020
6. विलियम्स ट्राइब और विने Buddhist thoughts (Kindle ed) Taylor & Francis
7. मोनिएर विलियम्स 1899 पृ. 483 संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी
8. अनालायों 2013 बी सलिपथाना। प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्ति का मार्ग।

****